तालीम से ही तस्वीर बदलेगी

कलीमुल हफ़ीज़ (हिलाल)

प्रकाशक
हफ़ीज़ एजुकशनल एण्ड चैरिटेबल ट्रस्ट

सभी अधिकार लेखक के पास सुरक्षित हैं।

नाम किताब	:	तालीम से ही तस्वीर बदलेगी
लेखक	:	कलीमुल हफ़ीज़ (हिलाल)
पृष्ठ	:	000
प्रकाशन	:	2018
संख्या	:	1000
क़ीमत	:	**300/=**
प्रकाशक	:	हफ़ीज़ एजुकेशनल एण्ड चैरिटेबलट्रस्ट बी-9, भास्कर कम्पाउण्ड (होटल रिवर व्यूँ) अबुल फ़ज़ल एंक्लेव जामिया नगर, नई दिल्ली-110025

अल्लाह का पहला आदेश

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَ ۚ﴿۱﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۚ﴿۲﴾ اِقْرَاْ وَ رَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۙ﴿۳﴾ الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۙ﴿۴﴾ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ یَعْلَمْ ؕ﴿۵﴾

पढ़ो (ए नबी[स0]) अपने रब के नाम के साथ जिस ने पैदा किया। जमे हुए ख़ून के एक लोथड़े से इन्सान की रचना की। पढ़ो, और तुम्हारा रब बड़ा करीम है, जिस ने क़लम के ज़रिए से इल्म सिखाया। इन्सान को वह इल्म दिया, जिसे वह न जानता था। (सूरः अल अलक़, आयत 1-5)

प्यारे नबी[स0] ने फ़रमाया

طَلَبُ الْعَلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ

इल्म हासिल करना
हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।

(इब्ने माजा हदीस न0 : 224)

सबक़ फिर पढ़ सदाक़त का, अदालत का, शुजाअत का।
लिया जाएगा, तुझ से काम दुनिया की इमामत का।।

(अल्लामा इक़बाल रह0)

अपने मोहसिन

बाबा-ए-तालीम

डॉ0 मुमताज़ अहमद ख़ाँ

के नाम

विषय-सची

पैग़ामात	09
पेशे लफ़्ज़	11
लेखक के क़लम से	13
ज़रा नम हो तो, यह मिट्टी	15
माज़ी क़रीब (निकट अतीत) की तालीमी तहरीकें	17
ख़ुदा ने आज तक	24
मिल्लत की मौजूदा तालीमी सूरते-हाल	26
रोशन सितारे	
रोशनी के मीनार	28
तालीम का मफ़हूम (मतलब)	31
तालीम की अहमियत व अफ़ादियत	32
तालीम का मक़सद	33
मेयारे तालीम	34
इल्म की तक़सीम	35
तालीम और ग़लत फ़हमियाँ	37
मौअस्सिर अवामिल ((प्रभावी फैक्टर्स)	39
तालीम की राह में रुकावटें	41
एहसासे कमतरी (हीन भावना) से निकलें	44
और कहीं ज़ातें हैं	46
खेल और तालीम	48

सक़ाफ़ती (सांस्क्रतिक) सरगर्मियाँ 49
बच्चों की शख़्सियत साज़ी 50
तालीमे बालिग़ान (शेढ़ शिक्षा) 51
तालीमे निसवाँ (महिला शिक्षा) 53
नादार तलबा (ग़रीब छात्र) की तालीम 55
ड्राप-आउटस की तालीम 57
तालीम में मसाजिद का रोल 58
हमारे तालीमी इदारे और बिरादरानें वतन (पेश बन्धु) 60
सुबह व शाम की क्लासेज़ 61
फ़ासिलाती (दूरगाामी) तालीम 62
ऑन लाईन एजुकेशन 63
तालीम और सोशल मीडिया 65
तालीम और क़यादत (नेतृत्व) 66
तालीम और वालिदैन (मां बाप) 69
अध्यापकों के अधिकार 72
अध्यापकों की जिम्मेदारियाँ 74
सामाजिक कार्यकर्ताओं 76
नेट वर्किंग 78
तालीम और तिजारत 79
हौसला अफ़ज़ाई (साहस बढ़ाना) 81
ख़ुदनुमाई (अहं) 82
सरकारी स्कीमें 83
जम्हूरियत और तालीम 84
तालीम और औक़ाफ़ 85

तालीम और बजटसाज़ी 86
क़ौमी वसाईल (मिल्लत के संसाधन) 87
इस वाद-ए-पुरख़ार (कठिन रास्ते) का राही हूँ में 88
इदारे के अनासिरे (तत्व) तरकीबी 91
नज़म व डिसीप्लिन (अनशासन) 96
दीनी तालीम के बड़े इदारे 98
मुफ्त कोचिंग सेन्टर 99
अक़लियती (मुस्लिम) युनिवर्सिटी 100
हिन्दुस्तान की मर्कज़ी युनिवर्सिटियाँ 101
हिन्दुस्तान के क़ाबिले ज़िक्र असरी (आधुनिक) इदारे 102
अहम बेनुल अक़वामी (अन्तर्राष्ट्रीय) युनिवर्सिटीयाँ 103
स्कालरशिप फ़राहम करने वाले इदारे 104

संदेश

प्रिय भाई कलीमुल हफ़ीज़!

अस्सलामु-अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु

ख़ुदा करे कि तुम ख़ुदा के बन्दों की ख़िदमत आख़िर दम तक करते रहो।

मुझे यह जानकर कि तुम तालीम के विषय (मौज़ू) पर कोई किताब छपवाने का इरादा रखते हो, जिस का तुम ने अपनी बात चीत में ज़िक्र किया है और मुझसे इस किताब पर प्रस्तावना लिखने की फ़रमाइश की है, बहुत ख़ुशी हुई। किताब की सूची देखकर यह इत्मीनान हुआ कि तुम ने अमल के योग्य और मिल्ली ज़रुरत की बातें लिखी हैं और ग़ैर ज़रूरी बातों को इस में शामिल न कर के किताब को बोझल नहीं बनाया है। मैं अपनी सेहत व कमज़ोरी और अल-अमीन की कुछ मसरुफ़ियात (व्यस्त) की बिना पर प्रस्तावना लिखने से विवश हूँ और तुम से क्षमा चाहता हूँ। प्रस्तावना लिखने से पहले ज़ाहिर है कि किताब को हर्फ़-हर्फ़ पढ़ना पड़ेगा, जिस के लिए मेरे पास भी वक़्त कम है और तुम्हारे पास भी, क्योंकि तुम भी बहुत जल्द उसे छपवाना चाहते हो। मैं इतना जानता हूँ और इसे कहने में कोई परेशानी महसूस नहीं करता कि तुम अमली इन्सान हो, ज़मीनी हक़ीक़त से वाक़िफ़ हो, इस राह के राही और इस रास्ते के हालात से अच्छी तरह वाक़िफ़ हो, इसलिए तुम्हारे ख़्यालात व विचार भी अमल के क़ाबिल हैं। अल्लाह ताआला इस किताब के ज़रिए सोने वालों को जगा दें और ग़ाफ़िलों को होशियार करे। आमीन!

वस्सलाम

डा0 मुमताज़ अहमद ख़ाँ

18 अगस्त 2018

संदेश

कलीमुल हफ़ीज़ उर्फ़ हिलाल साहब समाज और मुआशरे के हमदर्दों में से हैं। वह एक समय से मिल्लत की तालीमी पिछड़ेपन को दूर करने की कोशिश में लगे हुए हैं। उन्होंने देश के बड़े तालीमी इदारों को क़रीब से देखा है। ख़ुद भी बड़े तालीमी इदारे के संस्थापक व निगराँ हैं।

यह किताब 'तालीम से ही तस्वीर बदलेगी' उनके ख़्वाबों की ताबीर है। उनके विचार व नज़रयात और एहसासों का नमूना है। उनके दिल की आवाज़ है। .ख़्वाब हम सब देखते हैं हम अपने .ख़्वाबों की ताबीर दूसरों से मालूम करते हैं। कलीमुल हफ़ीज़ अपने .ख़्वाबों की ताबीर ख़ुद बन जाते हैं, अगर आप भी अपने .ख़्वाबों को पूरा करना चाहते हैं तो इस किताब का अध्ययन कीजिए।

मैं अपने भाई कलीमुल हफ़ीज़ साहब को इस किताब के छापने पर मुबारकबाद देता हूँ और दुआ करता हूँ कि यह किताब हिन्दुस्तान के मुसलमानों में एक तालीमी इन्क़िलाब लाने का कारण हो। एक ऐसा तालीमी इन्क़िलाब, जो जिहालत और आज्ञानता के जड़ को उखाड़ फेंके और मिल्लत को वक़ार व अज़मत (महानता) की बुलन्दी पर पहुँचा दे। आमीन !

डा0 मौ0 फ़ख़रुद्दीन
संस्थापक व एज़ाज़ी सिक्रेट्री
मैसको-हैदराबाद (तेलंगाना)

दो शब्द

पदम श्री प्रोफ़ेसर अख्तरुल वासे
सदर मौलाना आज़ाद यूनिवर्सिटी
जोधपुर (राजस्थान)
प्रोफ़ेसर इमिरेटस, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली

कलीमुल हफ़ीज़ साहब मेरे दोस्त हैं, यह दावा तो मैं नहीं कर सकता लेकिन मुझे उनके साथ अरफ़ाती भाई (एक साथ हज करने) का शर्फ़ हासिल है। मैं उनके उन तारीफ़ करने वालों में हूँ, जो दूर रहकर उनके कामों की क़द्र करने वाले हैं। कलीमुल हफ़ीज़ का मामला यह है कि वह सिर्फ़ बात ही के नहीं, बल्कि उससे ज़्यादा अमल के आदमी हैं। उन्हें दुनिया की जो समझ है उसका सुबूत यह है कि वे अपने कारोबार में भी कामयाब हैं और आम कारोबारियों के मुक़ाबले उनकी ख़ूबी व विशेषता यह है कि वह अकेले दर्द के बजाय ज़माने के ग़म के लिए आदर्श (Ideal) हैं।

उत्तरी भारत में मुसलमान जिस आर्थिक पिछड़ेपन और तालीमी पतन का शिकार रहे हैं, वह किसी से छुपी नहीं है। ख़ास तौर से 1947 ई0 के बाद उत्तरी भारत में मुसलमानों की हालत जाड़े की रात में भीगी हुई बकरियों जैसी बना दी गई है। उनके मौहल्लों में स्कूलों के बजाय थाने खोले गए। मुसलमानों के सामने दो ही मसले सबसे महत्वपूर्ण थे। एक अपने वुजूद की हिफ़ाज़त और दूसरे मज़हब का बचाव। इसलिए सियासी क़यादत फायर बिग्रेड का रोल अदा करने में लगी रही और मज़हबी रहनुमा मदारिस व मकातिब के क़याम पर तवज्जोह देते रहे। इस परस्थिति की सेंगीनी और संजीदगी को हम

आजकल सच्चर कमेटी के सच के तौर पर भी जानते हैं। लेकिन 6 दिसम्बर 1992 ई0 को बाबरी मस्जिद की शहादत के बाद उसके मलबे से मुसलमानों की जो सोच और नफ़सियात सामने आई है, वह यह थी कि हमें सिर्फ़ और सिर्फ़ तालीम पर तवज्जोह देना है। नतीजा यह है कि नए-नए स्कूल क़ायम हुए और मुसलमानों की बड़ी आबादी वाले इलाक़ों, गाँव और क़स्बों में एक नई तालीमी बेदारी अच्छे और बुरे तालीमी इदारों के क़याम की सूरत में देखने को मिली। इस दौर में कलीमुल हफ़ीज़ जैसे नौजवान ने भी यह तय किया कि वो तालीम के ज़रिए मुसलमानों की तस्वीर और तक़दीर दोनों को बदलेगें और इसके लिए उन्होंने तहरीक अल-अमीन के बानी सरबराह डॉ0 मुमताज़ अहमद ख़ाँ को अपने लिए आदर्श बनाया और सताइश की तमन्ना और दबले की परवाह से बे-नियाज़ अलग होकर इस कांटों से भरे रास्तें में सफ़र पर निकले और अब तक अपने देश सहित कई जगह तालीमी इदारे क़ायम कर चुके हैं और जो लोग इदारे क़ायम करने में दिलचस्पी रखते हैं, उनकी मदद करने को भी तैयार रहते हैं।

ज़ाहिर है कि तालीमी इदारे जहाँ क़ायम होते हैं उनका असर व प्रभाव उसी हल्क़े तक सीमित रहता है। अब कुछ दूसरों के मशवरों और साथ ही अपने पक्के इरादे के सहारे उन्होंने यह तय किया कि वह इस कांटो से भरी वादी में अपनी आबला पाई के बावजूद जो सफ़र है उसकी रुदाद लिखें और इसका मक़सद शोहरत नहीं, बल्कि यह है कि उनके ज़माने के लोग और उनके बाद की नई नस्ल जो हो वह उनके तजुरबों में शरीक हो सकें। भविष्य को सवारने और बेहतर बनाने के लिए ख़ुद भी उन्हीं की तरह साहस व हौसले के साथ मन्सूबा भी बनाएं और उम्मत के लिए काम करें।

यह बात वाज़ेह रहनी चाहिए कि उम्मत की फ़लाह व कामयाबी और देश की तरक़्क़ी दोनों में न कोई दूरी है और न कोई टकराव। देश भी तब ही तरक़्क़ी करेगा जब उसमें रहने वाले तमाम

लोगों को बराबर मौक़े फ़राहम (उपलब्ध) होंगे। तालीम और व्यापार वे दो कामयाबी की कुंजियाँ हैं, जो किसी और ने नहीं, ख़ुद इंसानों पर एहसान करने वाले आख़िरी पैग़म्बर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम की दी हुई हैं। वे जब हिरा नामक गार से क़ौम की तरफ़ आए तो नमाज़, ज़कात, रोज़ा और हज का हुक्म लेकर नहीं, बल्कि 'इक़रा' का मूलमंत्र लेकर आए। तिजारत पर उन्होंने जो ज़ोर दिया वह एक अफ़ाक़ी (सरव्यापी) हक़ीक़त है, क्योंकि जिस के हाथ में मंडी होती है उसी के हाथ में मुंडी भी होती है।

मैं अपने प्रिय कलीमुल हफ़ीज़ को मुबारकबाद दूँ या उनका शुक्रिया अदा करुँ, जिन्होंने इदारे क़ायम करके एक फर्ज़ अदा किया और यह किताब लिखकर एक क़र्ज़।

अल्लाह तआला दीन व दुनिया में उनको और उनसे जुड़े लोगों (सम्बन्धियों) के दर्जे को बुलन्द फ़रमाए और हमें इस कलीम का हारून बनने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन!

●●●

तास्सुरात

हफ़ीज़ एजुकेशनल एण्ड चेरिटेबिल ट्रस्ट के संस्थापक और रूहे रवाँ जनाब कलीमुल हफ़ीज़ एक जवां साल हौसला रखने वाले और बा-अमल शख़्स हैं। शगुफ्ता गुफ्तार, संजीदा व बा-वक़ार, पक्के इरादे के मालिक, धुन के पक्के, तालीम के शेदाई इल्म व आगही के क़द्रदान तालीमी इदारों के रसिया बारीक बीनी जुज़इयात रसी के हामिल, ज़मीनी हक़ीक़त व हालात से आगाह, क़ौम व मिल्लत को संवारने, जगाने और आगे बढ़ाने के सच्चे जज़्बे से भरे हुए, तालीम और शिक्षा व शिक्षण की अफ़ाक़ियत, लाज़वालियत और तसख़ीरियत (हर चीज़ पर क़ाबू पाना) की दावत देने वाले।

''तालीम से ही तस्वीर बदलेगी'' कलीमुल हफ़ीज़ (हिलाल) की पहली रचना है। किताब के शुरू में ही लेखक की फ़िक्री और वैचारिक रुझानात का अन्दाज़ा हो जाता है। क़ुरआन की पहली वह्य ''पढ़ो अपने रब के नाम के साथ'' और अल्लाह के रसूल[स0] का इर्शाद ''इल्म हासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है'' के हवाले से किताब का सफ़र व रूख़ तय हो जाता है। मुसलमान एक क़ौम की हैसियत से, दीन व दुनिया को एक साथ लाज़िम व लमज़ूम समझते हैं। दुनिया ही दीन की खेती है। इस व्यापक कायनात के असार और निशानी की आगाही का तक़ाज़ा है के ज़माने के इल्म व कला (फ़ुनून) का गहरा अध्ययन किया जाए। साथ ही इस्लाम दीन की वास्तविकता पर पूरा ईमान, अम्ली पैकर बन कर क़ौम व मिल्लत और समाज की तरक़्क़ी होने वाली तशकील और कायनात की तज़ईन व तर्बियत की जाए। इल्म की किसी भी तक़्सीम की बुरे गुमान के नतीजे में क़ौम को नाउम्मीदी व निराशी और पतन व ज़िल्लत के सिवा कुछ हाथ न आएगा।

> ''वह इल्म जो इंसान की फ़लाह व कामयाबी के लिए हासिल किया जाए, वह जाइज़ इल्म है।''
>
> कलीमुल हफ़ीज़

''तालीम से ही तस्वीर बदलेगी'' का शीर्षक किताब की अहमियत व महत्वपूर्ण होने का आदर्श है। पहले दिन से इतिहास गवाह है कि हर वे इन्सानी गरोह और क़ौम जो इल्म से आरास्ता और भाग-दौड़ में पहले नं0 पर होती है, उसके सर पर सरबुलन्दी व कामयाबी का ताज होता है। और दूसरे इसके जैरे नगीं कलीमुल हफ़ीज़ इस मुसल्लमा हक़ीक़त से पूरी तरह आगाह हैं। इस लिए इल्म की सरबुलन्दी व कामयाबी पर उनका यक़ीन भी इतना ही मज़बूत व गहरा है। वह दर्दमन्द दिल और ग़म से भरे दिल व जिगर के आदमी हैं। वह कहते हैं :

> ''तालीम के मैदान में अपनी क़ौम के पिछड़ेपन को देखता हूँ तो दिल ख़ून के आँसू रोता है। मेरी शायद ही ऐसी कोई मजलिस हो, जिसमें तालीम पर बात न करता हूँ, क़ौम की बेहिसी मुझे बेचैन रखती है।''
>
> कलीमुल हफ़ीज़

इस किताब का सबसे बड़ी ख़ूबी इसकी पेशकश में लेखक के दिल की बेचैनी व बेक़रारी और दर्दमन्दी व गमगुसारी के आँसू ही हैं। तालीम के विषय पर बहुत से लेख और किताब पहले से मौजूद हैं। लेकिन इस किताब का विशेषता इसकी प्रभावशालीता यानी असर डालने वाली है। लेखक ने अपने मुशाहदे व नज़रये और एहसासों व जज़्बों के एक साथ इम्तियाज़ से इन्तहा दर्जे की मानवियत और असर पज़ीरी पैदा की है। उन्होंने इल्मी तक़ाज़ों की अहमियत और तालीम की हमारे ज़माने में ज़रूरत को पाठक तक ऐसे दिल आवेज़ अन्दाज़ व उसलूब में पहुँचाया है कि ज़ेहन व दिल उसे मानने के सिवा कोई चारा नही पाते। इस किताब की नसर इन्तिहाई सादा, शुस्ता और आसान है।

लेखक ने भारतीय मुसलमानों में तालीमी सरगर्मियों का ज़िक्र करते हुए कई इदारों और शख़्सियतों का ज़िक्र किया है। इनमें सर सैयद अहमद भी हैं। कलीमुल हफ़ीज़ साहब की ज़ात में यक़ीनी तौर पर वह तत्व मौजूद हैं, जो तालीम को फैलाने की सरगर्मियों में एक क़ाइद की तरह किरदार के मुतक़ाज़ी होते हैं। सर सैयद अहमद ने अपने ज़माने की तालीमी पसमान्दगी और मिल्लत की सियासी, आर्थिक बदहाली को ख़ुद अपनी आंख से देखा था। इस लिए उन्होंने अपना लक्ष्य की तरफ़ अपने सफ़र को बग़ैर किसी की परवाह किए दो सतह पर जारी रखा। पहला यह है कि उन्होंने तालीमी केन्द्र क़ायम किए और दूसरे यह कि अपने लेखों में मिल्ली व क़ौमी, बल्कि बुरे कामों की बुराई भी की है। आसान और आम ज़बान में मुस्लिम समाज की कमज़ोरियों को दूर करने की भरपूर कोशिश करते रहे। कलीम साहब की किताब और इसके बयान करने का उसलूब बहुत सादा, आसान और दिल पर असर करने वाली है। यह बात तैय शुदा है कि मक़्सद साफ़ और लक्ष्य वाज़ेह हो तो दिल से जो बात निकलती है असर रखती है।

इस किताब के तीन हिस्से किए जा सकते हैं। पहला किताब के मौज़ू की इंतिहाई दर्दमानदाना और प्रभावी पेशकश, जिस से लेखक के तालीम को बढ़ावा देने से मिलने वाली कामयाबी पर पूरा यक़ीन होने का अंदाज़ा होता है। तालीम की सरफ़राज़ी के कई वाक़िए ख़ुद लेखक ने इस किताब में लिखे हैं। यह बात वाज़ेह है कि आदम[अलै0] से लेकर मुख़्तलिफ़ दौर में क़ौमों की तरक़्क़ी व ख़ुशहाली और सरबुलंदी व कामयाबी की वजह सिर्फ़ इल्म है। इल्म की ताजदारी इस दौर में और खुल कर सामने आ गई है कि इल्म व दानिश, मालूमात और नॉलेज का घोड़ा सरपट आगे की तरफ़ बढ़ता चला जाता है, ऐसे में जो क़ौम अपने आप को तालीम से आरास्ता और मुसल्लह नहीं करेगी, ज़िल्लत की बड़ी खाई में जा गिरेगी।ऐसा लगता है कि कलीमुल हफ़ीज़ का दर्दमंद दिल तालीम से बिछड़ जाने के आह को अपनी नज़र व

दृष्टि से महसूस करके बेक़रार व बेचैन हो जाता है। ग़मगुसारी और फ़िक्रमंदी के यही जज़बात उनकी लेख को प्रभावी और मक़्बूल बनाते हैं।

किताब का दूसरा हिस्सा तालीमी केन्द्र के क़ियाम के तक़ाज़ों के बयान पर आधारित है। स्कूल क्या है, मेयारी स्कूल व तदरीस क्या है, स्कूल की ज़रूरियात क्या हैं, समाज, प्रशासन और अध्यापक का तालीमी नश्व व नुमा में क्या रोल होता है। इस के साथ ही अमली इक़्दामात क्या-क्या हैं, किन बातों से तालीम के फ़रोग़ को प्रभावी और शख़्सियत साज़ बनाया जा सकता है। बच्चों की उनकी नफ़सियात के मुताबिक़ तर्बियत का फ़न क्या है। महिलाओं की शिक्षा और बालिग़ों की शिक्षा की अहमियत व ज़रूरत क्या है, इस सन विषय पर बेहद दीदाकुशा और अमली बातें बयान की गई हैं। लेखक की गहरी और दूरअंदेशी ने वह सब देखा है, जो तालीमी संस्थाओं के मेयारी होने पर दलालत करते हैं। लेखक ने मिल्लत के संसाधन के भरपूर इस्तेमाल का हुनर और तरीक़ा बयान किया है। मस्जिदों के हमेशा इस्तेमाल पर ख़ुसूसी तवज्जोह दिलाने की कोशिश की है। दूसरे मिल्ली असासों और संसाधन को भी तालीम व तदरीस के इस्तेमाल की प्रेरणा दी है।

किताब का तीसरा हिस्सा मालूमात पर आधारित है। यह मालूमात स्कूल के क़ियाम के बुनियादी और क़ानूनी उमूर और तक़ाज़ों के साथ-साथ दूसरी बुनियादी ज़रूरतों के लिए अनिवार्य हैं। यह इशारिए बेहद मुख़्लिसाना और अमली हैं। कोई मेयारी तालीमी इदारा इन बुनियादी उमूर को नज़र अदांज़ ???????

यूनिवर्सिटयां, दुनिया की अहम यूनिवसिटयां और छात्र व छात्रा को स्कॉलर्शिप फ़राहम करने वाले इदारों की व्यापक सूची मुहैया कराई गई है, जो बेहद फ़ायदेमंद है।

इस किताब की कम्पोज़िंग साफ़ व सुथरा और दीदहज़ेब है। सरवरक़ भी अच्छा और दिलकश है। कलीमुल हफ़ीज़ साहब की तस्वीर

और उनकी ज़ाती मालूमात के साथ-साथ दक्षिण भारत के मशहूर तालीम के माहिर व समाजी क़ायद जनाब मुमताज़ अहमद ख़ाँ और MESCO हैदराबाद के बानी डॉ0 मुहम्मद फ़ख़रूद्दी साहब के पैग़ामात की शख़्सियत की हर दिल अज़ीज़ियत की तरफ़ इशारा करते हैं। दो शब्द प्रो0 अख़्तरूल वासे साहब ने लिखा है।

इल्म को जिसने ज़िन्दगी दी है
मौत उस सख़्स को नहीं आती

प्रोफ़ेसर ख़ुर्शीद अहमद ख़ाँ
गया (बिहार)
9431207502

लेखक की ओर से

तालीम के विषय पर इतना कुछ लिखा जा चुका है कि अब इस विषय पर लिखते हुए दिल घबराता है। दिल यह सोचकर घबराता है कि पता नहीं इस विषय पर पड़ने वाले किताब पढ़ना तो दूर खोलकर भी देखेगा कि नहीं, लेकिन फिर यह ख़्याल पैदा हुआ कि मैं अपना फर्ज़ अदा कर दूँ, बाक़ी काम अल्लाह के हवाले है। क़लम उठा लिया है और लिखना शुरू कर दिया है। इस किताब में तालीम पर कोई इल्मी और फ़लसफ़ियाना बातें नहीं की गई हैं, बल्कि मैंने एक तरह से आप से अपने तजुरबात बयान किए हैं। मेरी कोशिश रही है कि किताब में बेकार की बातों से बचा जाए, जो सोचता हूँ, जो देखता हूँ और जो चाहता हूँ, मैंने बस उनको अपने शब्दों में ढाल दिया है। फिर भी एहसास है कि मैं अपनी बात शायद आप तक नहीं पहुँचा सका हूँ।

मैं न लेखक हूँ, न वक्ता और न बड़ा दीन का आलिम, न मेरा यह काम है कि मैं लेख लिखूं, किताबें प्रकाशित करूं, लेकिन तालीम के मैदान में अपनी क़ौम के पिछड़ेपन को देखता हूँ तो दिल ख़ून के आँसू रोता है। मेरी शायद ही कोई मजलिस ऐसी हो, जिसमें तालीम पर बात न करता हूँ। क़ौम की बेहिसी (मुर्दापन) मुझे हमेशा बेचैन रखती है। यही बेचैनी आज आप के अन्दर पैदा करने का साहस जुटा रहा हूँ। किताब में मौजूद मवाद (मेटर) से इल्म रखने वाले लोगों को इख़्तिलाफ़ का पूरा हक़ है, लेकिन उन पर यह मेरा हक़ है कि वे अपने इख़्तिलाफ़ से, अपने प्रस्तावों से और मेरी कोताहियों से मुझे आगाह करें।

किताब की तैयारी में मेरे कई भला चाहने वालों का सहयोग रहा। उनका भी जिन्होंने मशवरों से नवाज़ा, उनका भी जिन्होंने मुझे

हौसला दिया, उनका भी जिन्होंने कम्पोज़िंग, डिज़ाइनिंग, और छपवाने में मदद की। ये सारे लोग ख़ास तौर पर मेरे शुक्रिये के मुस्तहिक़ हैं, मगर कुछ लोगों का ज़िक्र ज़रूरी है। सबसे पहले बाबा-ए-तालीम डॉ0 मुमताज़ अहमद ख़ाँ, जिन्होंने तालीमी सोच बख़्शी, आपकी क़ीमती बातें किताब में शामिल हैं। अगर मैं यह कहूँ कि ये सारे विचार मैंने उन्हीं से उधार लिए हैं तो ग़लत न होगा। श्री प्रोफ़ेसर अख़्तरुलवासे साहब का ज़िक्र भी ज़रूरी है। आप कितने मसरुफ़ (व्यस्त) इंसान हैं, किस बुलन्दी पर रहते हुए मेरी किताब पर कुछ लिखा और मुझ पर एहसान किया और किताब को ताक़त अता की। डॉ0 फ़ख़रुद्दीन साहब का भी शुक्रिया अदा करता हूँ, जिनके तजुरबात मेरे लिए मशअले राह साबित हुए और जिन्होंने क़दम-क़दम पर तालीम के मैदान में मेरा साथ दिया। डॉ0 सलमान असद, डॉ0 रैहान ख़ान सूरी, डॉ0 मुज़फ़्फ़र हुसैन ग़ज़ाली का भी ममनून हूँ। इन सब ने किताब छपने से पहले उस को पढ़कर अपने कमेन्ट्स दिए। भाई अब्दुल ग़फ़्फ़ार सिद्दीक़ी भी दाद व प्रशंसा के मुस्तहिक़ हैं, जिन्होंने किताब के हर मरहले पर पूरा सहयोग दिया।

यह मेरी ना शुक्री होगी कि इस मौक़े पर मैं अपने माँ-बाप का ज़िक्र न करूं। वालिदे मोहतरम् मरहूम अब्दुल हफ़ीज़ साहब (अल्लाह उनको जन्नत में बुलन्द दरजात अता फ़रमाए) मुझे 13 साल की उम्र में छोड़कर चले गए, मगर मुझे ख़ूब याद है कि उन्होंने हम सब को यह नसीहत बार-बार की कि अपनी सोच बुलन्द रखना, सादा ज़िन्दगी गुज़ारना और समाज के लिए अपने हिस्से का काम ज़रूर करना, अब्बा ख़ुद भी आला तालीम याफ़्ता और सरकारी नौकर थे और हम सब भाई बहनों (दो भाई, चार बहनें) को भी आला तालीम की तरफ़ राग़िब करते थे। वालिदा मोहतरमा हसरती बेगम ने कम उम्र में बेवगी का ग़म तो उठाया ही, हमारी तालीम व तर्बियत और पालन पोषण का बोझ भी निहायत अच्छे डंग से उठाया। मैं आज जो कुछ हूँ, कह सकता हूँ कि यह अम्मी जान की मेहनत और दुआओं का नतीजा है। मेरी बड़ी बहन

नकहत सुल्ताना का भी मेरी तालीम व तर्बियत में अहम किरदार रहा, वे भी शुक्रिए की मुस्तहिक़ हैं। मैं अपनी बेगम डॉ0 उज़्मा हफ़ीज़ को कैसे भूल सकता हूँ, जिन्होंने मेरा हर क़दम पर साथ दिया और मेरे हौसले को बढ़ाया। मेरे बच्चे आलिया, इफ़लाह और सारा का भी ज़िक्र ज़रूरी है। उनकी तालीम व तर्बियत की ज़िम्मेदाारी ने मुझे क़ौम के दूसरे बच्चों की तालीम की तरफ़ मुतवज्जेह करने में अहम किरदार अदा किया।

वाज़ेह रहे कि यह किताब हिन्दुस्तान के मुसलमानों के हालात को सामने रखकर लिखी गई है, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ऐसे बहुत से देश हैं, जहाँ मुसलमान ग़ालिब व सत्ते में हैं और वहाँ जिहालत कोई मसला नहीं है।

पाठकों! तालीम के बग़ैर किसी तब्दीली की उम्मीद करना बेवक़ूफ़ों की दुनिया में रहना है। सिर्फ़ यह मैं नहीं कह रहा हूँ, ज़रा किताब के पृष्ठों को पलटिए और देखिए कि आसमान से ज़मीन तक के रहने वालों की यही आवाज़ है।

अल्लाह करे कि यह किताब आप के अन्दर तालीमी जागरूकता का भावना पैदा करे और आप ऐसा कुछ कर जाएँ कि आने वाली नस्लों के लिए हवाले के तौर पर काम आएँ।

कलीमुल हफ़ीज़ (दिल्ली)
20 अगस्त 2018

हिन्दी एडीशन के बारे में

मैं अल्लाह पाक का शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुझे अपनी उर्दू किताब ''तालीम से ही तस्वीर बदलेगी'' का हिन्दी रुपान्तर प्रस्तुत करने की तौफ़ीक़ बख्शी। अलहम्दुलिल्लाह उर्दू एडीशन को पाठकों ने बहुत सराहा, कुछ साथियों ने मुझे मशवरों से नवाज़ा। इस एडीशन में उन मशवरों का ख़्याल रखा गया है।

आम मुसलमानों की यह कमज़ोरी है कि वह न उर्दू अच्छी जानते हैं और न हिन्दी, अगर शुद्ध हिन्दी का प्रयोग किया जाए तब भी अधिकतर मुसलमान ठीक से लाभ नहीं उठा सकते और यही हाल उर्दू का है। इस पुस्तक में जो भाषा इस्तेमाल की गई है, वह बहुत आसान है। यह हिन्दी अनुवाद नहीं है, बल्कि उर्दू अलफ़ाज को देवनागरी लिपि में लिखा गया है अलबत्ता उर्दू के कठिन शब्दो की हिन्दी कोष्ठक ( ) में लिख दी गयी है ताकि समझने में आसानी हो।

मैं जनाब मन्सूर आग़ा साहब (देहली) का ख़ास तौर पर शुक्रगुज़ार हूँ कि उन्होंने उर्दू की पूरी किताब पढ़कर अपने क़ीमती मशवरों से नवाज़ा। अब यह पुस्तक आपके हाथों में है यदि आप समाज में कोई बदलाव चाहते हैं तो इसे सिर्फ़ पढ़कर न बैठ जाएं क्योंकि तब्दीली पढ़ने से नहीं करने से आती है।

कलीमुल हफ़ीज़ (हिलाल)
नई दिल्ली
20 अक्टूबर 2018

ज़रा नम हो तो ये मिट्टी .....

मौजूदा दौर में मुसलमानों में बहुत सी कमज़ोरियाँ हैं, जिनका उल्लेख इस किताब के मुख्तलिफ़ पृष्ठों पर किया गया है। लेकिन क्या मुसलमानों में सिर्फ़ कमज़ोरियाँ हैं? इनमें कोई ख़ूबी नहीं हैं? मैं भी इसी मिल्लत का आदमी हूँ, इसी किताब के पृष्ठों में सर सैयद तैयब जी, मौलाना मौ0 क़ासिम नानौतवी और मौजूदा दौर के बाबा-ए-तालीम डॉ0 मुमताज़ अहमद ख़ाँ साहब का ज़िक्र है। आज भी मुख़्तलिफ हिस्सों में सैकड़ों हमदर्द अपनी क़ौम की जिहालत दूर करने के जतन कर रहे हैं। इस किताब में उन बड़े और मशहूर तालीमी संस्थाओं का तज्किरा है, जिनसे उम्मत लाभ उठा रही है। इन ही पृष्ठों में हम ने अपने बुज़ुर्गों की बातें व बयानात दर्ज की हैं और कारनामों का ज़िक्र किया है। यह बात किसी तरह मुनासिब नहीं है कि हम कोताहियों का ज़िक्र करें और मुसलमानो की ख़ूबियों से आँखें बन्द कर लें। अल्लामा इक़्बाल ने कहा था :

नहीं है ना उम्मीद इक़्बाल अपनी कुश्ते वीराँ से
ज़रा नम हो तो यह मिट्टी बहुत ज़रखेज है साक़ी

हाँ यह मिट्टी बड़ी उबजाऊ है, यहाँ खेती हो सकती है, यह बंजर नहीं है। बस एक किसान की ज़रूरत है जो ज़रा सी मेहनत करके वक़्त पर बीज डाल दे और देखभाल करे, फिर लहलहाती फ़सल तैयार है। तमाम कमज़ोरियों के बावजूद यह मिल्लत अल्लाह पर ईमान रखती है, अपने रसूल(स0) पर जान देने को तैयार है, अपनी गाढ़ी कमाई दीन के नाम पर ख़र्च करती है। इसके मुक़ाबले कौन सी क़ौम है, जो इस देश में इतनी बड़ी संख्या में अपने मज़हबी संस्था बग़ैर सरकारी

सहायता के चला रही हो? कौन सी क़ौम है, जो लाखों उलमाओं के वेतन का प्रबन्ध करती है? कौन सी क़ौम है, जो लाखों तलबा की किफ़ालत करती हो? हमें और आपको अपने घर और घर के कुछ लोगों की किफ़ालत में पसीना छूट जाता है। मैं जब मदरसों में हज़ारों छात्र को देखता हूँ और तीनों वक़्त उनके खाने का हिसाब लगाता हूँ, उनके रहने, उनकी तालीम, उनके दूसरे ख़र्चों पर नज़र डालता हूँ, तो ख़ुदा की के राज़िक़ होने पर ईमान पुख्ता होता है। त्योहारों पर अपनी क़ौम की ख़ुशहाली देखने के लायक़ है। हज़ार मतभेदों के बावजूद कम-से-कम एक मौहल्ले और एक मसलक के हज़ारों लोग अपने इमाम की पैरवी करते नज़र आते हैं तो इफ़तराक़ व इन्तिशार पैदा करने वाले और उसे हवा देने वाले शयातीन भागते नज़र आते हैं।

हमें ना उम्मीद नहीं होना चाहिए, ना उम्मीदी कुफ़्र है। हमारे साथ अल्लाह है। हाँ बस हमें अल्लाह के साथ होना चाहिए, हम अगर अल्लाह का साथ दें तो इस कायनात का हर कण हमारा ख़ादिम और हमारा ग़ुलाम बन जाए।

ऐ मेरी क़ौम के नौजवानो! उठो और जिहालत के अन्धेरों के ख़िलाफ़ तैयार हो जाओ, तुम जो कुछ जानते हो दूसरों को सिखला दो और जो नहीं जानते वह दूसरों से सीख लो। अपनी आय का एक बड़ा हिस्सा तालीम के लिए वक़्फ़ कर दो। आओ तुम जिस मसलक से भी मोहब्बत रखते हो रखो, मगर तालीम को सीने से लगा लो, आओ इल्म का पौधा लगाओ, उसको अपने जिगर के ख़ून से सींचो। ऐ मेरी क़ौम के रहनुमाओ! आगे बढ़ो, तालीम के मैदान में हमारी रहनुमाई करो, तालीम के ज़रिए से तुम्हारी क़ियादत और उभरेगी, तुम्हारी पैरवी करने वाले जब इल्म की बुलंदी पर पहुँचेंगे तो तुम्हारे सर पर ही ताज रखा जाएगा। ऐ मेरी क़ौम के सियासत लोगो! तुम किसी भी सियासी संगठन से जुड़े रहो, मगर अपनी सियासत से तालीम के रास्ते आसान करो, तुम हुकूमत में रहते हुए बहुत कुछ कर सकते हो। आओ इल्म का एक

चिराग़ रौशन कर दो, ताकि क़ौम को रौशनी मिल सके। यक़ीन मानो तुम्हारी हुकूमत रौशनी में जगमगा उठेगी।

ऐ मेरी माओं! मैं तुम्हें सलाम करता हूँ, तुम्हारी गोद में ही अम्बिया ने परवरिश पाई, तुम्हारी आग़ोश ही से उम्मत के मुस्लिहीन ने तर्बियत पाई। मेरा ईमान है कि तुम बांझ नहीं हो, बस थोड़ा ध्यान दो तो आज हर बस्ती में सर सैयद अहम .ख़ाँ और क़ासिम नानौतवी पैदा हो सकते हैं।

●●●

माज़ी क़रीब की तालीमी तहरीकें (आन्दोलन)

अलीगढ़ तहरीक

तालीमी तहरीक का जब ज़िक्र आता है या आगे भी कभी आएगा तो सर सैयद[रह0] का ज़िक्र ज़रूर आएगा।

सर सैयद[रह0] ने मुसलमानों की तालीम के लिए हर सतह पर काम किया, उन्होंने तालीमी जागरूकता के लिए सफ़र भी की। तालीमी ज़रूरत के लिए साधन भी इकठ्ठा किए। मुख़्तलिफ़ तरह की मुखालिफ़तें भी बरदाश्त कीं, लेकिन आज हम जब सर सैयद की मेहनतों को देखते हैं तो दिल से उनके लिए दुआएँ निकलती हैं। सर सैयद अगर न होते या उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी न क़ायम की होती तो मिल्लत की तालीमी परस्थिति किस क़द्र .ख़राब होती। इस का सिर्फ़ अन्दाज़ा ही लगाया जा सकता है। असल में सर सैयद को यह यक़ीन हो चुका था कि हिन्दुस्तानी मुसलमान इन अंग्रेज़ों को किसी तरह मात नहीं दे सकते। अंग्रेज़ों की फ़ौजी और इन्तज़ामी ताक़त से ज़्यादा वो अंग्रेज़ों के साइन्सी उलूम में तरक़्क़ी, इंजीनयरिंग में महारत, नई ईजादें (आधुनिक अविष्कार), अंतर्राष्ट्रीय कमालात, रौशन .ख़्याली से प्रभावित थे।

सर सैयद के नज़रिए तालीम की .ख़ास बात यह थी कि मुसलमान अपने बच्चों को दीनी उलूम के साथ-साथ अंग्रेज़ी ज़बान की ख़ास तौर पर तालीम दिलाऐं। वे जानते थे कि आने वाले हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ों को हुकूमत करने के लिए ऐसे लोगों की ज़रूरत होगी, जो अंग्रेज़ी ज़बान से पूरी तरह वाक़िफ़ हों, सर सैयद अंग्रेज़ों से लड़ने के क़ायल न थे, बल्कि वे इस ज़मीनी हक़ीक़त को क़ुबूल करने पर ज़ोर दे

रहे थे, जिसे वे अपनी आँखों से देख रहे थे और वक़्त ने यह साबित भी कर दिया कि सर सैयद का नज़रिया सही था।

अलीगढ़ तहरीक ने तालीम के मैदान में मुसलमानों की बुरी हालत को कम करने में अहम रोल अदा किया। सर सैयद यह समझते थे और उनका ऐसा समझना बिल्कुल सही था कि आधुनिक तालीम के बग़ैर मुसलमानों का ज़िन्दगी और समाज के उच्च विभागों से रिश्ता ख़त्म हो जाएगा और वे दूसरी क़ौमों, ख़ास तौर से हिन्दू क़ौम से बहुत पीछे रह जाएंगे। वे आधुनिक तालीम की मुखालिफ़त को आत्महत्या ख़्याल करते थे।

यह ख़्याल सही नहीं है कि सर सैयद मज़हब और दीन के मुखालिफ़ थे। कुछ दीन के मामलों में उनके विचारों से इख़्तिलाफ़ किया जा सकता है और यह विचार का इख़्तिलाफ तो शुरू से ही उम्मत में मौजूद है। सामूहिक तौर पर सर सैयद इस्लाम दीन की तालीम को हासिल करने, इसकी प्रचार व प्रसार और उस पर अमल की तलक़ीन करते थे। वे भी मिशनरी स्कूलों में मुस्लिम बच्चों की तालीम के मुखालिफ़ थे। उन्होंने एक भाषण में फ़रमाया :

> ''मुसलमानों को शर्म नहीं आती कि मिशनरी तालीमगाहों में अपने बच्चों को भेजते हैं, उनको जोश पैदा नहीं हुआ, उनको ग़ैरत नहीं आई''।
>
> (तारीख़ तालीम व तर्बियत इस्लामिया, पृष्ठ 35)

सर सैयद की ख़्वाहिश थी कि एक ऐसी मुस्लिम नस्ल तैयार हो, जिसके एक हाथ में क़ुरआन और दूसरे हाथ में साइन्स हो। अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी सर सैयद की ख़्वाहिशों का अमली नमूना है और उनके तालीमी ख़्वाब की ताबीर है।

दारुलउलूम देवबन्द तहरीक

सर सैयद रह0 ने क़ौम व मिल्लत का अस्तित्व, उसकी सुरक्षा और उसका उरुज इसमें देखा कि क़ौम हाकिमों की ज़बान सीखे और

सरकारी कामों में उनका सहयोग करे। दूसरी तरफ़ उस वक्त के संगीन हालात को सामने रखते हुए उलमा ने महसूस किया कि अब जबकि मुसलमानों के हाथ से हुकूमत का नज्म बिल्कुल ही ख़त्म हो गया है। देश का काम काज अंग्रेज़ों के पास चला गया है। अग्रेज़ मुसलमानों के ख़ून के प्यासे हैं क्योंकि उन्होंने देश मुसलमानों से ही छीना है और मुसलमान ही उनके रास्ते में रोड़ा बन रहे हैं। पूरे देश में मुसलमानों का बे-दर्दी से क़त्ल हो रहा है, इस पर और यह कि ईसाई प्रचारक बे-रोक टोक ईसाईयत को फैला रहे हैं, इस्लाम पर एतराज़ात किए जा रहे हैं। इस्लाम का मज़ाक उड़ाया जा रहा है, बे-दीन मुसलमानों के ज़ेहन में शक व संदेह जन्म ले रहे हैं। ऐसे हालात में दीन की हिफ़ाज़त बहुत ज़रूरी है, अगर दीन के इल्म की हिफ़ाज़त, और उसका प्रचार व प्रसार न किया गया और ऐसे उलमा व विद्वान न तैयार किए गए, जो समाज में दीनी अहकामों (आदेशों) को बताने वाले हों और आम लोगों की दीनी रहनुमाई करने वाले हों तो मानो कि हुकूमत तो चली ही गई है। दुनिया तो लुट चुकी है, दीन भी जाएगा और आख़िरत भी लुट जाएगी।

इस एहसास को सामने रखते हुए एक ऐसे इदारे को क़ायम करने का फ़ैसला किया गया, जो हुकूमत की दख़ल अंदाज़ी से आज़ाद होगा, जिसमें सिर्फ़ दीन का इल्म ही पढ़ाए जाएंगे। यह इदारा 30 मई 1844 ई0 को देबवन्द की छत्ता मस्जिद में बेहद सादा अन्दाज़ में एक शिक्षक और एक छात्र से शुरू हुआ। इस मदरसे का नाम मदरसा अरबी व फ़ारसी रियाज़ी रखा गया। बाद में यही दारुलउलूम देबवन्द कहलाया, जो आज अन्तर्राष्ट्रीय शोहरत वाला है।

दारुलउलूम देबवन्द के संस्थापक हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी रह0 ने दारुलउलूम को चलाने के लिए आठ नियम तय किए जिन्हें ''उसूले हश्तगाना'' कहा जाता है। इन उसूलों में हुकूमत पर निर्भर न करने, मालदारों पर मुनहसिर न होने की तलक़ीन की गई है, बल्कि आम लोगों के चन्दे से इदारा चलाने पर ज़ोर दिया गया है।

दारुलउलूम देबवन्द सिर्फ़ एक मदरसा नहीं, बल्कि एक तहरीक है। इस तहरीक ने देश के मुख्तलिफ़ हिस्सों में मदरसे क़ायम किए और आज तक क़ायम किए जा रहे हैं। इन मदरसों की संख्या हज़ारों में हैं और उनमें तालीम हासिल करने वाले छात्र अगरचे मिल्लत का तीन चार फ़ीसद ही है, मगर उनकी संख्या लाखों में है। इस तहरीक के ज़रिए क़ायम होन वाले मदरसों में दर्से निज़ामी के तहत तालीम दी जाती है।

सर सैयद की अलीगढ़ तहरीक में ज़्यादा ज़ोर आधुनिक शिक्षा को हासिल करने पर दिया गया है तो दारुलउलूम तहरीक में ज़्यादा ज़ोर दीन की बुनियादी तालीम पर दिया गया है। यह अलग बात है कि दोनों ही (सर सैयद और क़ासिम नानौतवी) आधुनिक और दीनी उलूम हासिल करने को ज़रूरी ख़्याल करते हैं।

इस सिलसिले में सर सैयद रह0 का एक लेख देखें :

> ''हर एक मुसलमान पर फ़र्ज़ है कि वह अपने मज़हबी अक़ीदे और ज़रूरी मसाइल नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात से वाक़िफ़ हो ..... यही नेमत उनको दूसरी दुनिया यानी आख़िरत में नजात देने वाली और दर्दनाक अज़ाब से आड़े आने वाली है''।
>
> (मक़ालात सर सैयद 12/269)

दूसरी तरफ़ देवबन्द विचारधारा के इमाम हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह0 की राय देखिए :

> ''यह मेरी बहुत पुरानी राय है और अब राय देने से भी तबीअत दुखी होगी, इसलिए कि कोई अमल नहीं करता और राय यह है कि हिन्दुस्तान के तजबिरात के क़ानून और डाक ख़ाने और रेलवे के नियाम भी इस्लामी मदरसों के दर्स में दाख़िल होने चाहिए, यह सब मेरी राय है, मगर कोई नहीं मानता और सुनता है''। (अल-इफ़ाज़ात अलयोमिया, भाग-6, 135)

अन्जुमन इस्लाम मुम्बई

मुसलमानों की तालीमी और तर्बियती रहनुमाई और ज़रूरत पूरी करने के लिए ग़दर के बाद जबकि अभी घाव ताज़ा थे और हर दिन नए घाव लग रहे थे, न देश का भविष्य बहुत संगठित था और न देश वाले का। नए हुक्मरानों के अपराध का देश शिकार था। एक डर का आलम था। एक दहशत का माहौल था। ऐसे में हर शख़्स को अपनी-अपनी पड़ी थी। लेकिन कुछ लोग ऐसे भी थे, जो मिल्लत के भविष्य की मन्सूबा बन्दी कर रहे थे। उनमें एक नाम अगर सर सैयद[अलै0] का है तो एक नाम जस्टिस बदरुद्दीन तैयब जी का भी।

बदरुद्दीन तैयब जी पहले हिन्दुस्तानी मुसलमान थे, जो पन्द्रह साल की उम्र में आधुनिक शिक्षा के लिए इंग्लिस्तान गए, वे मुम्बई हाइकोर्ट के पहले मुस्लिम चीफ़ जस्टिस बने थे। आल इण्डिया काँग्रेस के तीसरे सदर चुने गय। बदरुद्दीन तैयब जी बड़े जहीन, दूरगामी शख़्स थे। उनकी तालीमी पॉलिसी में ख़ास बात यह थी कि वे प्राइमरी तालीम मादरी ज़बान में देने के क़ायल थे। यही वजह है कि आज महाराष्ट्र में सैंकड़ों उर्दू मेडियम स्कूल हैं, जिनमें हज़ारों छात्र उर्दू मेडियम से तालीम हासिल कर रहे हैं।

अन्जुमने-इस्लाम एक रजिस्टर्ड बाडी है, जो तालीम के मैदान में काम कर रहा है। इसके तहत सैंकड़ों इदारे काम कर रहे हैं, जिसमें प्राइमरी स्कूल, मिडिल स्कूल, गर्ल्स स्कूल, पॉलिटैक्निक कॉलेज, इंजीनयरिंग कॉलेज, यूनानी तिब्बिया कॉलेज, फार्मेसी कॉलेज और आर्किटेक्चर कॉलेज हैं। तालीमी इदारों के साथ-साथ यतीम ख़ाने, लाइब्रेरी, पब्लिक हॉल, ट्रेनिंग एण्ड कोचिंग सेन्टर्स हैं, जो महाराष्ट्र के मुसलमानों की बड़ी तालीमी व तर्बियती ख़िदमात अंजाम दे रहे हैं।

अन्जुमने-इस्लाम ने औक़ाफ़ की जायदादों का क़ानूनी इख़्तियार हासिल करके उन्हें मिल्लत के कामों के लिए इस्तेमाल किया। अन्जुमन इस वक़्त 23 ख़ैराती ट्रस्टों की मुतवल्ली (प्रबन्धक) है।

दीनी तालीमी काउंसिल उत्तर प्रदेश

सरकारी प्राइमरी स्कूलों में मुस्लिम छात्र को दो तरह की परेशानियाँ थीं। पहला उनके अक़ीदे के ख़िलाफ़ कुछ काम अंजाम पाते थे। देवमालाई क़िस्से व कहानियाँ उनके कोर्स में शामिल थीं। धीरे-धीरे साम्प्रदायिक लोग इसमें दाख़िल होकर अपना ज़हर घोल रहे थे। दूसरा यह कि उनको इनकी मादरी ज़बान में तालीम नहीं दी जा रही थी, इन दोनों पहलुओं को देखते हुए दीनी तालीमी काउंसिल की स्थापना 1959 ई0 में हुई। दीनी तालीमी काउंसिल ने ज़िला स्तर पर काम करने के लिए ज़िला शाखाओं को ''अन्जुमन तालीमाते-दीन'' का नाम दिया। यह तहरीक उत्तर प्रदेश में लगी रही। इसके ज़रिए हुकूमत के उन कामों की मुखालिफ़त की गई, जो वह स्कूलों में इस्लाम के मुखालिफ़ निसाबे तालीम के ज़रिए कर रही थी। सरकारी निसाब का जायज़ा लिया गया और समय पर सरकारी संस्थाओं को मुतवज्जेह किया गया, जिसमें कामयाबी भी मिली। मुसलमानों में तालीमी जागरूकता के लिए जुलूस निकाले गए, कान्फ्रेंसें हुईं। मादरी ज़बान में तालीम की अहमियत को वाज़ेह किया गया और प्राइमरी स्कूल क़ायम किए गए, जहाँ उर्दू ज़बान में तालीम दी गई। दीनी तालीमी काउंसिल से हज़ारों स्कूल जुड़े। इनके ज़िम्मेदार उन इदारों के अध्यापक की तर्बियत करते और इदारों को उर्दू में कोर्स की किताबें फ़राहम करते, वार्षिक परिक्षा के पर्चे फ़राहम करने और कभी-कभी उनके मसले के हल में दिलचस्पी लेते। इस तहरीक के संस्थापक क़ाज़ी अदील अब्बासी साहब थे। इस से जुड़े लोगों में मौलाना अबुल हसन अली नदवी और मौलाना अबुल्लैस इस्लाही नदवी जैसी शख़्सियत थीं। लेकिन यह तहरीक इन बुर्ज़ुगों के दुनिया से चले जाने के बाद सिर्फ़ नाम के बाक़ी रह गए और अब लगभग ऑफ़िस तक सिमटकर रह गए हैं। 1959 ई0 से 1993 ई0 तक लगभग 35 साल इस तहरीक ने बहुत से बड़े बड़े काम किए।

अल-अमीन तहरीक

आज़ादी से पहले व तुरन्त बाद ज़्यादा तर तहरीकें उत्तरी भारत में उठीं, चाहे इनका ताल्लुक़ आज़ादी से हो या ख़िलाफ़त को हासिल करने से या तालीम से, लेकिन आज़ादी के लगभग 19 साल बाद यानी 1966 ई0 में दक्षिण से एक तालीमी तहरीक उठी और देखते ही देखते देश व देश के बाहर भी छा गई। इस तहरीक का नाम अल-अमीन तहरीक है। ''अल-अमीन'' के संस्थापक डॉ0 मुमताज़ अहमद ख़ाँ साहब हैं। अल्लाह इन्हें लम्बी उम्र अता फ़रमाए।

डॉ0 मुमताज़ अहमद ख़ाँ एक मेडीकल (M.B.B.S.) डॉक्टर हैं, दौलतमंद हैं, आज़ादी से पहले पैदा हुए। आज़ादी के नक़्शे और यादें इनके दिल व दिमाग़ में रची बसी हैं। इन्होंने आज़ादी के वक्त और इसके बाद भयानक मंज़र अपनी आँखों से देखे थे। तालीम हासिल करने के बाद मिल्लत के भले और अच्छे लोगों की मुख़्तलिफ़ मज्लिसों में मिल्लत की परस्थिति पर बात चीत करते हुए सुना था। वह देख रहे थे कि आज़ादी के बाद देश के दो हिस्से हो गए। मानो दिल के दो टुकड़े हो गए। फिर ख़ून बहने वाले दंगों ने आज़ादी से पहले के हिन्दू-मुसलमान भाईचारे की ईंट से ईंट बजा दी। मुसलमान हैरान व परेशान रेगिस्तान में खड़े रह गए, इनका सब कुछ लुट चुका था, मायूसी की एक केफ़ियत थी, महरूमियों का एक आलम था, इन हालात ने डॉ0 साहब को बहुत प्रभावित किया और आपने कुछ हम ख़्याल दोस्तों के साथ अल-अमीन एजुकेशनल सोसायटी क़ायम की और अपना सारा धन वदौलत इसमें लगा दिया, इस तहरीक के ज़रिए दक्षिण में तालीमी इंक़िलाब आ गया। अल-अमीन के तहत आज मुख़्तलिफ़ सतह के सैंकड़ों कॉलेज और इदारे चल रहें हैं। इनमें प्राइमरी से लेकर डिग्री कॉलेज भी हैं, मेडिकल व इन्जीनियरिंग कॉलेज भी हैं, बैंक भी हैं, पॉलिटेक्निक भी हैं, हैल्थ सेन्टर भी हैं, समाचार पत्र, पत्रिका भी हैं। अल-अमीन का दायरा दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा है। देश के बाहर भी इसके इदारे काम कर रहें हैं।

क़ौम की तालीमी पिछड़ेपन को दूर करने में अल-अमीन का बड़ा हिस्सा है। कई हज़ार छात्र आज अल-अमीन के छत्रछाया तालीम हासिल कर रहें हैं। हज़ारों नौजवानों को रोज़गार मिला है और अल-अमीन से तहरीक पाकर बहुत से लोगों ने हौसला व हिम्मत बान्धा है और सैंकड़ों इदारे क़ायम किए, जो आज अहम मक़ाम रखते हैं। मैंने ख़ुद अल-अमीन से हौसला हासिल किया और अपने नगर में एक तालीमी इदारा क़ायम किया है।

तहरीकें कामयाब तब होती हैं, जब उनके बानी यानी शुरू करने वाले लोग मुख़्लिस होते हैं। काम करने वाले होते हैं, अपना सब कुछ लगा देते हैं, ज़माने के मिज़ाज को पहचानने वाले होते हैं और समझदार होते हैं, उनके अन्दर ज़माने को साथ लेकर चलने की भरपूर योग्यता होती है। वे ज़माने के ऊँच नीच से नहीं घबराते, वे इख़्तिलाफ़ करने वालों के इख़्तिलाफ़ से क़ुव्वत हासिल करते हैं, वे हसद (ईर्ष्या) करने वालों के हसद से हौसला पाते हैं। उनका रास्ता कोई रुकावट नहीं रोक सकती। वे जब चलते हैं तो चलते जाते हैं। वे अपने पीछे मुड़कर नहीं देखते, वे तमाम वक़्ती सहारों से बे-नियाज़ होकर एक हक़ीक़ी मालिक के मुस्तक़िल और मज़बूत सहारे को पकड़ता है तो तहरीकें कामयाब होती हैं। निःसन्देह डॉ0 मुमताज़ अहमद खाँ साहब के अन्दर ये सारी विशेषताएं (ख़ूबियाँ) पाई जाती हैं।

तहरीकों को आगे बढ़ाने में दोस्तों और इससे जुड़े हुए लोगों का भी बड़ा योगदान होता है। लेकिन यह उसी वक़्त साथ आते हैं, जब कारवाँ के अमीर के अन्दर दिल की नरमी देखते हैं वर्ना :

कोई कारवाँ से टूटा, कोई बदगुमाँ हरम से,
कि अमीरे कारवाँ में, नहीं ख़ूए दिल नवाज़ी।

और

निगाह बुलन्द, सुखन दिल नवाज़, जाँ पुर सोज़,
यही है रख़्ते सफ़र मीरे कारवाँ के लिए।

अल-अमीन के संस्थापक के अन्दर ये तीनों ख़ूबियाँ मौजूद हैं और उनका कारवाँ हज़ार रूकावटों के बावजूद आगे बढ़ रहा है। उनके कारनामों को न अल्फ़ाज़ बयान कर सकते हैं और न ही बग़ैर देखे समझा जा सकता है। अल-अमीन तहरीक ने इस दौर में वे बड़े-बड़े काम अंजाम दिए हैं, जिसे देखकर अक्ल दंग रह जाती है। मैं अल-अमीन और डॉ0 साहब की तुलना अलीगढ़ तहरीक और सर सैयद से करने की हिम्मत तो नहीं कर सकता, मगर कह सकता हूँ कि अल-अमीन तहरीक अलीगढ़ तहरीक की और डॉ0 मुमताज़ ख़ाँ साहब सर सैयद के उत्तराधिकारी हैं। अल-अमीन के इदारों और उनके कामों को जानने के लिए उसकी वेबसाइट का विज़िट करें :

w.w.w.alameen66-edu.org

●●●

मुस्लिम एजुकेशनल सोसाइटी केरला (MES)

1964 में कालीकट में मुस्लिम एजुकेशनल सोसाइटी की स्थापना की गई थी। मरहूम डॉ0 पीके अब्दुल ग़फ़ूर के महान नेतृत्व के तहत शिक्षा आन्दोलन शुरू हुआ, उस महान व्यक्तित्व की दूरदर्शी दृष्टि ने एमईएस के साथ चमत्कार किया था, आन्दोलन बड़ी संख्या में पेशेवरों और व्यापारियों द्वारा समर्थित था और थोड़े समय में इस महान आन्दोलन की शाखाएं केरल के सभी जिलों में फैल गईं थी। आज 20,000 से अधिक सक्रिय सदस्यों, 85,000 छात्रों और 15,000 कर्मचारियों के सदस्यों की संख्या के साथ हमारे देश में यह एक बड़ा शैक्षणिक संगठन है। इसकी न केवल केरल के प्रत्येक ज़िलें में इकाइयां हैं, बल्कि यह पड़ोसी राज्यों तक फैली हुई हैं, मध्य पूर्व देशों में भी इसकी शाखाएं हैं।

1964 में, सोसाइटी ने केरल के मलप्पुरम जिले के क्वीपुपुरम में एमईएस कॉलेज ऑफ़ इंजीनियरिंग की स्थापना की थी, जिसने शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए राज्य में अनुसरण करने के लिए एक एतिहासिक क्रांति शुरू की थी। वंचित वर्ग और एमईएस के पास अपने मिशन को पूरा करने के लिए इस प्रतिबद्ध पहल पर गर्व करने का वास्तविक अधिकार और कारण है। तब से राज्य के शैक्षणिक परिदृश्य में जो वृद्धि हुई वह आक्रामक और सुसंगत थी। सोसाइटी के एडेड पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज एनएएसी द्वारा मान्यता प्राप्त हैं। ग़ैर सरकारी स्व-वित्त पोषण कॉलेज समेत सभी कॉलेज लगातार विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में परिणामों का उच्च प्रतिशत प्राप्त कर रहे हैं, जिसमें कई छात्र मेधावी रैंक हासिल कर रहे हैं।

पिछले 6 दशकों में केरल में मुसलमानों के शैक्षिणिक उत्थान में परंपागत रूप से सबसे पिछड़े समुदाय की शिक्षा में एक उल्लेखनीय और ग़ौरवशाली परिवर्तन देखा जा रहा है। इस उपलब्धि के पीछे मुस्लिम एजुकेशनल सोसाइटी (एमईएस) का योगदान है।

मुस्लिम एजुकेशनल सोसाइटी की शुरूआत के समय, विशेषाधिकार प्राप्त वर्गों की तुलना में बड़े पैमाने पर राज्य में मुस्लिम समुदाय का शिक्षा स्तर काफ़ी कम था। मुस्लिम शिक्षा के क्षेत्र में बेहद पिछड़े थे और उनके पास केवल 3 कॉलेज थे और उनके प्रबंधन के तहत कुछ हद तक स्कूल थे।

लेकिन सैमिनार, संगोठी, शैक्षिक सम्मेलन और इसी तरह के शिक्षा प्रचार कार्यक्रमों के माध्यम से किए गए लगातार और गहन जागरूकता अभियानों के परिणामस्वरुप मुस्लिम एजुकेशनल सोसाइटी मुस्लिम समुदाय के दृष्टिकोण में एक परिवर्तन लाने में सफल रही और इस सफलता ने इस महान संगठन को प्रेरित किया लगभग 70 लाख केरल मुसलमानों की कुल जनसंख्या में से कम से कम 10 लाख एमईएस की शैक्षणिक गतिविधियों से सीधे या अप्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित हुए हैं। केरल की साक्षरता दर शतप्रतिशत है जो देश में सबसे ज़्यादा है और एमईएस बड़े पैमाने पर इस में योगदान करने के लिए गर्व से अपने क्रेडिट के हिस्से का दावा कर सकता है। केरल में कम शिशु मृत्यु दर और उच्च जीवन प्रत्याशा आदि जैसे आधुनिकीकरण के अन्य सूचकांक भी हैं, जिसमें एमईएस ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। गर्व से यह उल्लेख किया जा सकता है कि यह एमईएस था जो विशेष रूप से मुस्लिम महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था। यह ध्यान देने योग्य है कि एमईएस की शुरूआत के समय शैक्षिण क्षेत्र में महिलाओं की मौजूदगी शायद 1% थी, जो अब 70% तक पहुंच गई है। पिछले कुछ वर्षों में, एमईएस ने

देश के विभिन्न स्थानों पर विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं और दुर्भाग्य से प्रभावित असंख्य लोगों को वित्तीय सहायता प्रदान की है।

सोसाइटी का प्राथमिक दृष्टिकोण सभी तरीक़ों से भारत के लोगों के शैक्षिक, सामाजिक और आर्थिक उन्नति के लिए काम करना है और मिशन कॉलेजों, स्कूलों, तकनीकी और वाणिज्यिक संस्थानों, किंडरगार्टन, व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्रों, दंत चिकित्सा कॉलेज, पैरामेडिकल संस्थान, वयस्क शिक्षा केन्द्र, टेलरिंग स्कूल, खाद्य शिल्प संस्थान, कंप्यूटर संस्थान, सामुदायिक विकास केन्द्र, मानव संसाधन विकास संस्थान, परामर्श केन्द्र और कोई अन्य शैक्षिक संस्थान, या तो सोसाइटी द्वारा सीधे या किसी अन्य संगठन, विश्वविद्यालयों, कॉर्पोरेट निकायों के सहयोग के साथ चलाना है। लोगों के बीच नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को बढ़ावा देने, महिलाओं और बच्चों के कल्याण के लिए काम करने और वृद्धावस्था के घरों को स्थापित करने और बनाए रखने के लिए प्रतिष्ठान स्थापित करने के परिकल्पना भी की गई है। समाज के ग़रीब और पिछड़े वर्गों की सहायता के लिए हर तरह की धर्मार्थ और सामाजिक सेवा गतिविधियों में शामिल होना एमईएस का सर्वोपरि मिशन है। इस समय एमईएस के अन्तर्गत निम्न शिक्षण एवं अन्य संस्थाएं चल रही हैं।

Engineering College	5
Medical College	4
Management College	1
Training Institution	2
ARTS AND SCIENCE COLLEGES	21
Women's College	7
Schools	77
Hospital	4
Industrial Training Centres (ITC)	5
Teachers Training Centre (TTC)	1

Computer Centre	1
Special schools	2
Hostels	8
Orphanages	3
Cultural Complexes	3
Other Institutions	6

आज पीके अब्दुल ग़फ़ूर हमारे बीच नहीं हैं। लेकिन उनके द्वारा किए गए यह सारे कार्य उनको हमेशा ज़िन्दा रखेंगे। अब उनके अधूरे सपनों को साकार करने का बेड़ा उनके पुत्र श्री डॉ0 फ़ज़ल ग़फ़ूर ने उठाया है। अधिक जानकारी के लिए देखें।

web. www.meskerala.com

●●●

ख़ुदा ने आज तक .....

पवित्र क़ुरआन में अल्लाह तआला का इर्शाद है :

''बेशक अल्लाह तआला किसी क़ौम की हालत उस वक़्त तक नहीं बदलता, जब तक वे ख़ुद अपने आप को बदलने के लिए राज़ी न हो।'' (सूरः रअ़द, 11)

इस आयत में अल्लाह तआला की सुन्नत बयान की गई है। उसकी सुन्नत यह है कि वह किसी व्यक्ति का मामला हो या क़ौम का, वह उसके हालात उस वक़्त तक नहीं बदलता, जब तक कि ख़ुद वह व्यक्ति या क़ौम अपने हालात के बदलने की तरफ़ ध्यान नहीं देता। इसके लिए मन्सूबे नहीं बनाती, इसके लिए कोशिश नहीं करती। यह ख़ुदा का तरीक़ा है। यह तरीक़ा सबके साथ है, इसमें ईमान, इस्लाम, कुफ़्र और शिर्क की कोई तख़सीस (फ़र्क़) नहीं है। एक शख़्स अपनी तालीमी पिछड़ेपन को दूर करना चाहता है तो इसे किताब भी लेना होगा, क़लम भी पकड़ना होगा, किसी शिक्षक से पढ़ना भी होगा। इन साधनों के बग़ैर वह पढ़ नहीं सकता। ऐसा नहीं होगा कि अल्लाह अपने फ़रिश्ते को सब कुछ लेकर भेजे। फ़रिश्ता आए और फूँक मारे और बस काम हो गया। कुछ देर में एक अनपढ़, पढ़ा लिखा हो गया। देहात में एक मिसाल दी जाती है कि जन्नत देखना है तो मरना ख़ुद ही पड़ेगा।

हमारी समुदाय के लोग समुदाय के पिछड़ेपन का ज़िक्र करेंगे। इस पर कॉन्फ्रेंस करेंगे, इस पर डिबेट होंगे, लंच और डिनर आयोजित करेंगे। ये सब भी करना चाहिए लेकिन करने के काम जब तक नहीं होंगे तब तक तबदीली नहीं आएगी। खाने पर आप कितना ही अच्छा लेक्चर दे दें, कितनी बड़ी कान्फ्रेस कर लें और कितनी ही किताब पढ़

लें, भूख नहीं मिट सकती, बल्कि इच्छा बढ़ जाएगी। भूख तो खाना मुँह के ज़रिए से पेट तक पहुँचने से ही ख़त्म होगी।

तब्दीली की बातें सब करते हैं। मस्जिद के इमाम से लेकर सियासत के इमाम तक भाषण देते हैं। मशवरे देते हैं, लेकिन इससे एक क़दम आगे बढ़ने की बहस नहीं करते और इस लिए क़ौम जहाँ थी, वहीं रह जाती है। सुनने वालों के दिलों में भी जज़्बे उमंडते हैं, अज़्म व इरादे की कोपलें फूटती हैं लेकिन कोई आगे नहीं बढ़ता तो सारी कोंपलें मुरझा जाती हैं, सारे जज़्बात ठंड हो जाते हैं। मैं कहता हूँ आप ख़ुद आगे बढ़िये, एक गली के लोग, एक ख़ानदान के लोग, एक मस्जिद के मुक़्तदी, एक बस्ती के लोग ख़ुद आगे बढ़ें, इकट्ठा हों। मसाइल की सूची बनाएं, इनके हल पर ग़ौर करें, तब्दीली के लिए इनमें से जो व्यक्ति जो किरदार अदा कर सकता हो, वह ख़ुद को पेश करे। इख़्लास (निष्ठा) के साथ, त्याग के साथ, सहनशीलता, बर्दाश्त और सब्र के साथ आगे बढ़ें। अल्लाह से आस लगाते हुए, अपनी कोताहियों पर माफ़ी माँगते हुए, इंसानों की कामयाबी का जज़्बा रखते हुए क़दम से क़दम मिलाकर जब हम चलेंगे तो तब्दीली आएगी, इन्क़िलाब दस्तक देगा।

●●●

मिल्लत की मौजूदा तालीमी परस्थिति

मिल्लत की तालीमी परस्थिति देश के विभिन्न भागों में अलग-अलग हैं। दक्षिण के राज्यों में तालीमी परस्थिति बहुत बेहतर है उत्तर के मुक़ाबले में, उत्तर में भी उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल और असाम की परस्थिति बहुत ख़राब है। इन पृष्ठों में सरकारी आंकड़े सच्चर कमेटी की रिपोर्ट और राय शुमारी रिपोर्ट का जायज़ा लेना मक़सूद नहीं है, देश की तालीमी पॉलीसी के मुताबिक़ पढ़ा लिखा हर वो शख़्स है, जो अपना नाम लिख सकता हो, चाहे इसके आगे उसको कुछ नहीं आता हो।

देश का हर सूझबूझ रखने वाला अपने आस-पास के माहोल को देखकर ही तालीमी परस्थिति का अन्दाज़ा लगा सकता है और हमें अपने आस-पास का ही जायज़ा लेना चाहिए। क्योंकि वहीं हमें काम करना है। मगर यह बात इत्मीनान के लायक़ है कि मिल्लत में तालीम के मैदान में काम करने वाले बहुत से नेक जज़बा रखने वाले लोग आगे आ रहे हैं और कुछ संस्था बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। पहले के मुक़ाबले तालीम हासिल करने की तरफ़ रुझान बढ़ा है। लेकिन ये अफ़राद, ये इदारे और रुझान मिल्लत की आबादी के अनुपात आटे में हल्के नमक के बराबर है। अभी बहुत काम की आवश्यकता है।

आप अपने मौहल्ले, गांव और शहर का जायज़ा लेंगे तो पाएंगे कि 40 साल से बड़ी उम्र के लोगों में अपना नाम लिखने वालों की संख्या 30% है। कोई एक ज़बान पढ़ने वालो की संख्या 20% है और मिडिल किस स्तर तक के तालीम पाए लोगों की संख्या 10% है। नई

नस्ल यानी 15 से 40 साल तक के लोगों की दर दोगुनी है। हमारा मसला अब अनपढ़ कम और तालीम को इसके तक़ाज़ों से हासिल करना ज़्यादा है। आज बच्चे पढ़ते हैं, पास भी होते हैं लेकिन बेहद कम नम्बरों से जिसके कारण वे बहुत से कोर्सेज़ में दाख़िल पाने के योग्य नहीं रहते और इस तरह सारी कोशिशें बर्बाद हो जाती हैं।

बाप का ज़्यादा वक़्त कमाने के फ़िक्र में और माँ का ज़्यादा वक़्त ज़िन्दगी के शिकवे करने में गुज़र जाते हैं। घर में अगर कोई शिक्षित है भी तो उसे यह शिकायत है कि मेरी कौन सुनता है और जहाँ सुनने वाले हैं, वहाँ सुनाने वाला कोई नहीं मिलता। मस्जिद के इमाम साहब भी अपनी दो रकात पढ़ाकर मुत्मइन हो जाते हैं और कभी करते हैं तो सिर्फ़ तक़रीर। वे भी ज़मीन से नीचे और आसमान से ऊपर की बातें। अगरचे शिक्षित लोगों में बढ़ौतरी महसूस हो रहा है लेकिन यह एक धोखा है, हाथों में कागज़ी तालीम है और डिग्रीयों के मुताबिक़ क्षमता कम है।

हर मस्जिद में मदरसे हैं, हर बिरादरी का मदरसा है और हर मौलवी साहब का मदरसा है, एक एक मौहल्ले में सात-सात मदरसे हैं, इनमें बच्चे भी हैं, लेकिन शिक्षक को वक़्त पर वेतन नहीं मिलता है, न बैठने का सही व्यवस्था है, न साँस लेने के लिए मुनासिब हवा। हर कोई रसीद बुक थामे चँदा कर रहा है। पहले सिर्फ़ रमज़ान में होता था अब हर मौसम और हर महीने में होता है। मुख्तलिफ़ नामों और बहानों से होता है, सब कुछ होता है, मगर नहीं होती तो सिर्फ़ तालीम। यह कड़ुवा सच्चाई है। माफ़ कीजएगा कि कुछ बड़े मदरसों को छोड़ दीजए। गली, मौहल्लों के मदरसे की शक्ल में दुकानों का यही हाल है। रही सही कमी सरकार के मदरसे मॉर्डनाइज़ेशन ने पूरी कर दी, जिसे देखो एक सोसाइटी बनाता है, मदरसा खोलता है, मंज़ूरी लेता है। तहतानिया

में तीन और फ़ोक़ानिया में तीन शिक्षक को नियुक्त करता है, इनसे नियुक्ती के नाम पर भारी रक़म लेकर अपनी जेब भरता है। सरकार वक़्त पर वेतन नहीं देती, इसलिए शिक्षक तालीम नहीं देते, मैनेजर साहब रिश्वत लेते हैं, इसलिए बोल नहीं सकते। सरकार से देर या सवेर वेतन तो आ जाएगा, मगर जब वह आएगा बहुत देर हो चुकी होगी। बच्चे आगे जा चुके होगें, इनकी तालीम का नुक़सान तो हो चुका होगा।

मिल्लत में आधुनिक शिक्षा संस्था की भी कमी नहीं है। मुस्लिम आबादियों में इंग्लिश मेडियम स्कूल के नाम पर बड़ी संख्या में स्कूल हैं। छः महीने दाख़लों की कन्वेसिंग करने में और छः महीने फ़ीस वसूलने में गुज़र जाते हैं। असल में शिक्षित बेरोज़गार नौजवानों का रोज़गार है।

मिल्लत की शिक्षा संस्थाओं में एक तरह की संस्था ऐसी है, जो क़ौम के पैसों से तामीर की गई और क़ौम के लोग इस कमेटी के मेम्बर बनाएगए। इन संस्थाओं को भी सरकार से मंज़ूरी मिली और मंज़ूरी के साथ माली सहायता भी मिल गई तो तालीम ख़त्म हो गई। कमेटी में अध्यक्ष बनने का झगड़ा हमेशा रहा, अदालतों में मुक़दमात रहे। असातज़ा कमेटी की इस जंग के तमाशबीन बन गए और यूँ इन इदारों में भी तालीमी निज़ाम चौपट होकर रह गया।

मिल्लत की मौजूदा सूरते हाल में बेहतरी के जो मंज़र हम देख रहे हैं, मुझे माफ़ कीजिएगा हम पर ग़ैरों का एहसान है। **RSS** और मिशनरी स्कूलों ने तालीम के मैदान में जो महत्वपूर्ण काम किया है, सोच और विचार के मतभेदों के बावजूद अपनी मिसाल आप है। इन संस्थाओं में मिल्लत के नौनिहालों की एक बड़ी संख्या तालीम प्राप्त कर रही हैं। और आज मुसलमानों में आधुनिक शिक्षा पाए हुए अधिक्तर लोग उन्हीं संस्थाओं से निकल रहे हैं। कुल मिला कर मिल्लत में तालीमी बेदारी का एहसास बाबरी मस्जिद की शहादत के बाद पैदा

हुआ। और इसी के फ़ौरन बाद अफ़राद और संस्थाओं ने इस तरफ़ तवज्जोह की। लेकिन ज़रूरत के मुताबिक़ यह तवज्जोह और काम बहुत कम है, जो है हम उसकी क़द्र करते हैं और अधिक होने की आशा करते हैं।

यह है मिल्लत की पूरी तालीम के सिलसिले में हालत, जिसे आप हर मुस्लिम बस्ती में देख सकते हैं। मैं कह चुका हूँ कि सारे मदरसे और स्कूल व कॉलेज ऐसे नहीं हैं, मगर 95% की यही हालत है। हमें अपना सख़्त एहतसाब (आंकलन) करना चाहिए और फिर हल के लिए ठोस क़दम भी उठाना चाहिए।

●●●